हिंदी जनपद का सामाजिक इतिहास
सौम्या गुप्ता
शिखा झींगन
प्रभात कुमार
देवनाथ पाठक
कमल मिश्रा
संजीव और महिका
शुभनीत कौशिक

दलित अस्मिता विमर्श
जोएल ली
चारु गुप्ता
नीता कोली
सुरेश कुमार
धनंजय सिंह
सुमित उज्जैनवाल

विविध संधान
तिमसाल मसूद
प्रवीण कुमार झा

समीक्षा लेख
रबि प्रकाश
कुँवर प्रांजल सिंह

समीक्षा
अरुण कुमार
वागीश शुक्ल
मोना दास
वेंकटेश कुमार
आलोक टंडन

किताबें मिलीं
मनोज मोहन

ISSN 2320-8201

CSDS
बेमिसाल 60 साल
1963-2023

जनवरी-दिसंबर, 2022 | वर्ष 10, संयुक्तांक 19-20

साभार : चम्बल आर्काइव्स, इटावा

साभार : चम्बल आर्काइव्स, इटावा

प्रतिमान

समय

समाज

संस्कृति

जनवरी-दिसंबर, 2022

वर्ष 10, संयुक्तांक, 19-20

जनवरी-दिसंबर, 2022 (वर्ष 10, संयुक्तांक, 19-20)
समाज-विज्ञान और मानविकी की पूर्व-समीक्षित अर्धवार्षिक पत्रिका

CSDS बेमिसाल 60 साल 1963-2023 **भारतीय भाषा कार्यक्रम**
विकासशील समाज अध्ययन पीठ (सीएसडीएस)
29, राजपुर रोड, दिल्ली-110054 फ़ोन : 91.11. 23942199
ईमेल : pratiman@csds.in; वेबसाइट : www.csds.in/pratiman
+

4695/21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 फ़ोन : 91.11.23273167, 23275710
ईमेल : vaniprakashan@gmail.com; वेबसाइट : www.vaniprakashan.com

सेंटर फ़ॉर द स्टडी ऑफ़ डिवेलपिंग सोसाइटीज़, 29, राजपुर रोड, दिल्ली-110054 के निदेशक अवधेन्द्र शरण के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक अमिता माहेश्वरी, वाणी प्रकाशन, 4695/21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 द्वारा प्रकाशित और ऑप्शन प्रिंटोफ़ास्ट, 41, पटपड़गंज इंडस्ट्रियल एरिया, दिल्ली-110092 में मुद्रित।
संपादक : रविकान्त

मूल्य : व्यक्तिगत : ₹ 350, संस्थागत : ₹ 500
विदेशों के लिए : $ 20 + डाक ख़र्च अतिरिक्त या किसी अन्य मुद्रा की समकक्ष राशि
ISSN: 2320-8201

अनुक्रम

विविध संधान

समीक्षा लेख

समीक्षा

किताबें मिलीं

भीमगीत : भोजपुरी लोक में बहुजन अस्मिता का हस्तक्षेप

धनंजय सिंह

भूमंडलीकरण के दौर में नई प्रौद्योगिकी के आगमन से संस्कृति उद्योग का बड़े पैमाने पर उभार हुआ। यह उभार इतना हुआ कि संस्कृति के मौलिक स्वभाव में ह्रास की बात की जाने लगी। उस ह्रास के साथ भारत में बहुजन की आवाज़ भी उभरी। भोजपुरी संस्कृति के संदर्भ में यह बात अक्षरशः लागू होती है। भोजपुरी की दृश्य संस्कृति को अश्लील समझा गया और आज भी समझा जा रहा है जबकि उसमें बहुजन की स्वस्थ परंपराओं को भी पर्याप्त जगह मिली है। पिछले एक दशक के दरम्यान भोजपुरी की दृश्य संस्कृति में भीमगीत एक नए अध्याय के रूप में जुड़ा है। भीमगीतों के माध्यम से पहचान और अस्मिता का यह संघर्ष आकर्षक हो गया है,

क्योंकि इसमें रचनात्मक संघर्ष की झलक दिखती है, अश्लीलता या हिंसा को बढ़ावा नहीं। ऐसे समाज में जहाँ जातीय एवं धार्मिक अपमान को प्रतिष्ठित करते मुहावरे प्रचलित हों, वहाँ अस्मिता के लिए भीमगीतों का विकास होना अत्यंत ज़रूरी है। प्रस्तुत अध्याय भोजपुरी लोकगीतों की बदलती परंपरा में भीमगीत[1], डिजिटल दुनिया की दृश्य-संस्कृति और शिवचर्चा बनाम भीमचर्चा जैसे लोक-संस्कृति के विविध पक्षों के साथ विश्लेषित कर समाज, संस्कृति और बहुजन अस्मिता के समकालीन सामाजिक इतिहास को उनकी क्षेत्रीयता के साथ व्याख्यायित करने का प्रयास है।

आभासी दुनिया में यूट्यूब जन समाज के लिए सर्वसुलभ अभिलेखागार है। यह अध्याय यूट्यूब पर उपलब्ध ऑडियो-वीडियो भोजपुरी भीमगीतों को बतौर प्राथमिक स्रोत से बहुजन अस्मिता की पड़ताल करता है और उन भीमगीत के गीतकारों एवं गायकों से टेलीफ़ोनिक वार्त्ता को भी अपने अध्ययन के दायरे में लाता है।

बाबा भीम अइलें हो // भीमगीत : एक परिचय

भीमगीत महाराष्ट्र में 'आंबेडकर के बाद की परिघटना के रूप में पोवादास/शाहिरी, लोक भजन से लेकर बड़े पैमाने पर तैयार किए गए कैसेट्स से विकसित हुआ है और अब रैप और पॉप गीतों तक पहुँच गया है।'[2] महाराष्ट्र में बहुजन समुदाय में नामकरण, मृत्यु और उत्सवों के अवसर पर गाए जाने वाले भीमगीतों की अद्वितीय परंपरा है। भीमगीतों ने आंबेडकर के संघर्षों और उनके चिंतन को सरलतम ढंग से वंचित समुदायों के मानस में पहुँचाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। महाराष्ट्र के बहुजन समुदाय की परंपराओं में आंबेडकर गुँथे हुए हैं, जिन्होंने जाति विभेदकारी समाज के मुँह पर आंबेडकर की मौजूदगी का हर रोज़ दावा किया है। आंबेडकर की मौजूदगी का दावा जाति-विरोधी आंदोलन के इतिहास में महाराष्ट्र और दक्षिण के राज्यों से लेकर उड़ीसा-बंगाल तक फैल चुका है।

वहीं पंजाब में आंबेडकर की पूर्ववर्ती परंपरा रविदास डेरों की सामाजिक आंदोलनों से बनी है। पिछले आठ-दस सालों में यू-ट्यूब पर रविदास, आंबेडकर या फिर चमार समुदाय को लेकर बने भीमगीत काफ़ी लोकप्रिय हुए हैं। पंजाब में 'आंबेडकर फ़ोक' या 'चमार पॉप' उभरकर आया है और गिन्नी माही उसकी झंडाबरदार हैं। उनके अल्बमों में प्रमुख हैं – 'फ़ैन बाबा साहिब दी' (2016), डेंजर चमार 1 और 2 (2016), डाउन 2 अर्थ और डॉलर इत्यादि। भीमगीत गायक परमजीत सिंह पम्मा का कहना है कि 'दूसरी जातियों के गाने पर क्यों नाचें जबकि हम अपनी जाति के ऊपर बने हुए गानों पर भी नाच सकते हैं। उन्हें सुन सकते हैं।'[3]

---

[1] भोजपुरी भीमगीत भारत की अन्य भाषाओं में गाए जाने वाले भीमगीतों से इस अर्थ में भिन्न हैं, जो दलित शब्द का प्रयोग न करके बहुजन पद का प्रयोग करता है.

[2] https://hindi.newsclick.in/Ambedkarite-Protest-Music-D alit-Panthers-Cultural-Protest

[3] https://www.newsplatform.in/big-news/dalit-pop-culture-political-assertion/

पंजाबी भीमगीतों में आलीशान गाड़ियाँ एवं भव्य महलनुमा मकान दीखते हैं। पंजाबी बहुजनों के उभार में कनाडा, अमेरिका, युरोप में प्रवसन की बड़ी भूमिका है और प्रवसन ने उनकी आर्थिक समृद्धि में चार चाँद लगा दिए हैं, फलस्वरूप भीमगीत एवं अन्य कलाएँ समृद्ध हुईं। हालाँकि, 'पंजाब में दलित समुदाय में प्रतिरोध की परंपरा रही है, लेकिन इन गीतों में यह प्राइड नए तेवर और नए सौंदर्य-शास्त्र के साथ सामने आया है। मसलन, डेंजर चमार गाने में हथियारों से तुलना, दृश्य में बॉडी बिल्डर युवा, जलती आग, धातुओं के सामान आदि नया सौंदर्य-शास्त्र रचते हैं।'[4] भारत के अन्य क्षेत्रों की अपेक्षाकृत पंजाबी दलित ज़्यादा समृद्ध हैं। इसलिए उनके भीमगीतों का सौंदर्य अलग रूप में दिखता है।

भीमगीत के अतिरिक्त बहुजन चेतना से संपन्न दृश्य-संस्कृति में फ़िल्मों ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज की है। सवर्ण फ़िल्मकारों में शेखर कपूर की *बैन्डिट क्वीन* (1994), जगमोहन मुंदड़ा की *बवंडर* (2000), आनंद पटवर्धन की *जय भीम कॉमरेड* (2012), संजीव जायसवाल की *शूद्रा : द राइजिंग* (2012), केतन मेहता की *माँझी द माउंटेनमैन* (2015), अनुभव सिन्हा की *आर्टिकल 15* (2019) इत्यादि फ़िल्में बहुजन के उत्पीड़न पर केंद्रित हैं। लेकिन बहुजन फ़िल्मकारों में दक्षिण भारतीय तमिल के पा. रंजीत की फ़िल्म *काला* (2018) और मराठी के नागराज मंजुले की *फंड्री* (2013), *सैराट* (2016) एवं झुंड (2022), योगेश पगारे की शॉर्टफ़िल्म *मुलाकरम्*[5] (2020), ज्ञानवेल की *जय भीम* (2021), इत्यादि फ़िल्मों की विषय-वस्तु से लेकर उनकी प्रस्तुति के सौंदर्य तक बहुजन सौंदर्य-बोध से सराबोर हैं।

भीमगीत के इतिहास की शुरुआत महाराष्ट्र से होती है। भीमगीत भी लोकगीत बन चुके हैं। लेकिन दोनों में फ़र्क़ भी है। जहाँ ज़्यादातर लोकगीत हिंदू पौराणिक कथाओं एवं किसानी जीवन का उत्सव मनाते हैं, वहीं भीमगीत में बाबा साहब आंबेडकर एवं महात्मा बुद्ध की जीवन कथाओं का उल्लेख मिलता है। आंबेडकर महाराष्ट्र के सबसे पिछड़ी जातियों में से एक महार जाति से ताल्लुक रखते थे, जो एक अस्पृश्य जाति मानी जाती थी। शिक्षित होकर उन्होंने दमनकारी जाति-व्यवस्था पर हमला किया, आज़ादी मिलने पर भारत का संविधान लिखा, अपने समाज को आधुनिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए जागरूक किया। 9 दिसंबर, 1956 में देहांत से पूर्व उन्होंने हिंदू धर्म त्यागकर दलित-पिछड़ी जाति के लाखों लोगों के साथ बौद्ध धर्म अपना लिया। उनकी जीवन-यात्रा से लेकर भारतीय संविधान निर्माण तक की कहानी पहले पहल मराठी में भीमगीतों का विषय बनी। लेकिन 'भीमगीतों में से सबसे बड़ी बात है – स्त्री मुक्ति। आंबेडकर ने जाति-व्यवस्था के ख़िलाफ़ अपने संघर्षों में स्त्री समानता और उनके अधिकारों को सबसे ज़रूरी माना था। उनका कहना था कि किसी समुदाय की उन्नति का आकलन उस समुदाय की स्त्रियों की दशा को देखकर किया जाना चाहिए। आंबेडकरवादी आंदोलन में स्त्रियों की भूमिका बढ़-चढ़कर रही है। बहुजन स्त्रियों ने भीमगीतों

---

[4] वही.

[5] https://youtu.be/Bg0h7XM_7zA.

को नए आयाम दिए। जिसका सबसे प्रमुख उदाहरण पालना गीत हैं। पालना गीतों को बच्चों के जन्म के मौक़े पर गाने की परंपरा है। पालना गीतों की शुरुआत इसलिए हुई ताकि दलित स्त्रियाँ अपने बच्चों को बाबा साहेब के जीवन-आदर्शों पर चलने की प्रेरणा दें। यह आदर्श समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व के आदर्श हैं। महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र में पालना गीत गाए जाते हैं। पालना गीतों की तरह ओबी भी हैं। पालना तो लिखित है लेकिन ओबी सिर्फ़ वाचिक माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को मिला है। दूसरा, ओबी गीत महिलाएँ उस वक़्त गाती हैं जब समूह में काम कर रही होती हैं। ये मराठी साहित्य के उन ओबी गीतों से अलग हैं जिन्हें अक्सर पुरुष गाते हैं। स्त्रियों द्वारा गाए जाने वाले ये गीत इसलिए भी मौखिक रह गए क्योंकि ये उन बहुजन स्त्रियों के बीच प्रचलित थे जो शिक्षा से वंचित थीं। भीमगीतों में लिखित और मौखिक दोनों तरह की परंपराएँ आती हैं। जिनमें भक्ति गीतों से लेकर वैज्ञानिक चिंतन और राजनीतिक विचारों पर आधारित गीत भी शामिल हैं। बहुजन स्त्रियों के बीच भक्ति गीतों का प्रचलन ज़्यादा है। बहुजन पुरुषों के बीच राजनीतिक विमर्श पर आधारित गीत ज़्यादा रुझान में हैं। इसी तरह भीमगीतों की परंपरा चली आ रही है और एक के बाद एक नए गीत इससे जुड़ते जा रहे हैं।'[6] पहले-पहल यह भीमगीत मात्र मराठी भाषा तक सीमित रहा लेकिन धीरे-धीरे भीमगीत भारत-वर्ष की हर क्षेत्रीय भाषा में गाया जाने लगा है।

बाप दादा के अइसन कहानी रहे // बहुजन वैचारिकी की परंपरा

चरथ भिक्खवे चारिकं
बहुजन हिताय बहुजन सुखाय
लोकानुकंपाय
अत्थाय हिताय[7] (*विनयपिटक: महावग्ग*)

अर्थात हे भिक्षुओ! बहुजन के हित के लिए, बहुजन के सुख के लिए, लोगों को मदद पहुँचाने के लिए निरंतर भ्रमण करते रहो। ढाई हज़ार साल पहले बुद्ध द्वारा दिया गया यह पहला लोकतांत्रिक नारा था, जो एक ऐसे दर्शन पर आधारित था जो जनहित में जनता और अच्छे कामों के लिए समृद्धि और शांति चाहता है। यह केवल संदेश नहीं है बल्कि विज्ञान आधारित दृष्टिकोण है। यह बहुजन के लिए उपलब्ध होना चाहिए, जिन्हें वंचित रखा गया था। बुद्ध उच्च वर्गों जैसे राजाओं, धार्मिक शक्तियों, पुजारियों और अमीर लोगों के ख़िलाफ़ नहीं थे, बल्कि वे उनसे आमजन के लिए काम करने का आग्रह करते हैं। 'बहुजन हिताय-बहुजन सुखाय' के बाद उनके शिष्यों ने भारत के भीतर और बाहर उनकी शिक्षा का प्रसार किया और सहज ही

---

[6] https://www.aajtak.in/podcast/best-podcasts-in-hindi/audio/why-bheem-geet-historical-tradition-is-so-important-1052639-2020-04-14.

[7] https://hi.wikipedia.org/wiki/बहुजन_हिताय_बहुजन_सुखाय.

दुनिया के प्रमुख हिस्सों में फैल गया और स्थानीय संस्कृति के साथ मिश्रित हो गया। बहुजन बौद्धिकी की शुरुआत यहीं से होती है और यहीं से बहुजन अस्मिता में दो महत्त्वपूर्ण पहलू जुड़ते हैं – बुद्ध दर्शन का स्वीकार तथा *मनुस्मृति* का नकार।

सातवीं से नौवीं सदी में द्रविड भक्ति आंदोलन में आलवारों-नयनारों ने जाति-पाँति और ऊँच-नीच के भेद भाव को मिटाकर सबको समान रूप से भक्ति करने की वकालत की थी। भक्ति का अधिकार सबके लिए घोषित किया था। केवल घोषणा से नहीं बल्कि अपने स्वयं के जीवन के आदर्शों से उन्होंने ऐसी सामाजिक चेतना का निर्माण किया कि कोई उच्च वर्ण के कारण श्रेष्ठ नहीं होता है। बल्कि भगवत भक्ति से वह श्रेष्ठ हो सकता है और तब यह क़िस्सा भी लोकप्रिय था कि ऊँची जाति के भक्त निचली जाति के भक्तों को जब तक गले नहीं लगाएँगे, अपने बराबर का नहीं समझेंगे, तब तक भगवान उनकी पूजा और प्रसाद को स्वीकार नहीं करेंगे। हालाँकि, इस आंदोलन में जाति व्यवस्था का पूरी तरह से नकार नहीं था। यह केवल शैव संतों के विशेष रूप से तिरुनावुक्करकर (अप्पार नाम से प्रसिद्ध) के भजनों में है।[8] इसके ठीक सौ साल बाद उत्तर भारत में समतामूलक समाज के लिए प्रतिबद्ध सिद्धों-नाथों ने तो बहुत बड़े पैमाने पर वर्णाश्रम-व्यवस्था के विरोध में संग्राम ही छेड़ा हुआ था। चौरासी सिद्धों में सर्वाधिक प्रसिद्ध सरहपाद अपने विचारों में बहुत तार्किक थे।[9] सिद्ध-नाथों ने निर्गुण भक्ति-आंदोलन की जबर्दस्त पृष्ठभूमि बना दिया था, जिसकी देन थे – कबीर,

---

[8] आर. चम्पकलक्ष्मी (1996) : 145, 153-163.

[9] कहा जाता है कि जिस तेवर के साथ सरहपाद ब्राह्मणवाद का विरोध करते थे, ब्राह्मण उससे इतना विचलित हुए कि सरहपाद को जाति और देश निकाला के लिए वे सम्राट के पास प्रस्ताव लेकर गए थे. यह भी कहा जाता है कि अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए सरहपाद को खौलता हुआ घी पीना पड़ा था और खौलते तेल में हाथ डालना पड़ा था.

कमाल, रैदास, धर्मदास, गुरु नानक, दादू दयाल, सुंदरदास, रज़्ज़ब, मलूकदास, नाभादास, अक्षर अनन्य, जंभनाथ, हरिदास निरंजनी, नामदेव, गोरा, सांवता, नरहरि, सेना, राका, त्रिलोचन, सदन, चरणदास, पलटूसाहब, बुलासाहब, सिंगाजी इत्यादि। ये सभी सामाजिक रूप से दलित, स्त्री, मुस्लिम या पिछड़े समाज से थे और जिन्हें मध्यकालीन बहुजन चेतना के संत भी कहते हैं। इन सबने अपनी भजन गायकी में वर्णवादी व्यवस्था के ख़िलाफ़ समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व पर आधारित समाज का काल्पनिक चित्र प्रस्तुत किया।

औपनिवेशिक भारत के विभिन्न हिस्सों में एक से बढ़कर एक बहुजन बौद्धिक हुए, जिसकी शुरुआत महाराष्ट्र में महात्मा ज्योतिबा फुले से हुई। पहली बार इन्होंने बहुजन चेतना को ज़मीनी रूप दिया और इन्हें साथ मिला – पत्नी सवित्रीबाई फुले और फ़ातिमा शेख पर फुले के सत्यशोधक समाज का बहुत प्रभाव था। उन्होंने जाति व्यवस्था के ख़िलाफ़ जनता में शाहिरी संगीत को एक औज़ार के रूप इस्तेमाल किया। लेकिन 1930 तक आते-आते 'सत्य-शोधक जलसा' में शाहिरी की आवाज़ धीमी पड़ गई थी, लेकिन बदले में तब एक फिर नई शक्ति उभर आई – 'आंबेडकरी जलसा'। इस जलसे ने डॉ. आंबेडकर की शिक्षाओं और दर्शन का प्रतिनिधित्व भीमगीतों में मौखिक रूप से किया। अर्थात शाहूजी महाराज के आर्थिक सहयोग से डॉ. आंबेडकर पढ़-लिखकर भारत के एक ऐसे महानायक बने, जिन्होंने बहिष्कृत भारत के मूकनायकों (बेज़ुबान बहुजन) को भी प्रबुद्ध भारत में बदलने के लिए ब्लूप्रिंट तैयार किया। जिसका सबूत भारतीय संविधान है।

उन्हीं दिनों केरल में अयंकली (त्रावणकोर में छुआछूत के ख़िलाफ़ समाज-सुधार), तमिलनाडु में पेरियार (द्रविड़ आंदोलन के संस्थापक एवं सच्ची *रामायण* के लेखक), पंजाब में माँगूराम (मनुवादी व्यवस्था के ख़िलाफ़ बहुजन कल्याण के लिए संघर्ष), उत्तर प्रदेश में स्वामी अछूतानंद (आदि हिंदू के प्रवर्तक एवं बहुजन नवजागरण के अगुवा) से लेकर ललई सिंह यादव जैसे बहुजन चिंतकों ने भारत के अभिजन समाज एवं संस्कृति के बरअक्स बहुजन की बेहतरी के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। इस कड़ी में रामस्वरूप वर्मा द्वारा स्थापित 'अर्जक संघ' की भूमिका भी वैज्ञानिक रूप से सामाजिक परिवर्तन के लिए उल्लेखनीय है।

प्रसिद्ध एवं विवादित बहुजन चिंतक कांचा इल्लैया का तर्क है कि 'दलित-बहुजनों की स्थिति उस काली और ख़ूबसूरत भैंस की तरह है, जो भारत की गायों की तुलना में सबसे ज़्यादा और सफ़ेद दूध देती है, लेकिन नागरिक समाज में न तो उनकी कोई पवित्र स्थिति है, और न उनको संविधान में कानूनी संरक्षण मिला हुआ है। यह स्थिति हमें यह सोचने के लिए मजबूर करती है कि आख़िर यह किसका भारत है? (कांचा इलैया, 2018)'। बेशक बहुजन साहित्य अधिकांश का साहित्य है, लेकिन इसका आधार संख्या बल नहीं, बल्कि इसके विपरीत सामाजिक और सांस्कृतिक वंचना के पक्ष में, जिस सामूहिक-सामुदायिक-सांप्र-दायिक चेतना का निर्माण मनुवाद करता है, बहुजन साहित्य उसके ख़िलाफ़ विभिन्न सामाजिक समुदायों की प्रतिनिधि आवाज़ है। यह साहित्य समाज के उस अंतिम जन का

साहित्य है, जो किसी भी प्रकार की वंचना झेल रहा है। यह न सिर्फ़ आर्थिक वंचना और अस्पृश्यता के सवाल को उठाता है, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक शोषण के विविध रूपों को भी चिह्नित करता है।[10] इस मामले में शरण कुमार लिंबाले से सहमत हुआ जा सकता है कि 'सत्यं, शिवं और सुंदरम' भेदभाव की कल्पनाएँ हैं – जिसके आधार पर आम आदमी का शोषण हुआ है। दरअसल सत्यं, शिवं और सुंदरम की धारणा तो सवर्ण समाज के स्वार्थ-साधना के लिए रची गई साज़िश है।... विश्व में मनुष्य जैसी 'सत्य और सुंदर' दूसरी कोई चीज़ नहीं है। इसीलिए तो मनुष्य की समता, स्वतंत्रता, न्याय और बन्धुत्व की चर्चा होनी आवश्यक है।'[11] इसी सौंदर्य दृष्टि पर बहुजन साहित्य को परखा जाना चाहिए।

निःसंदेह अभिजन का सौंदर्यशास्त्र 'आनंद' पर आधारित है जबकि बहुजन का पीड़ा व वेदना पर। आनंद का सौंदर्यशास्त्र बहुजन के सौंदर्यशास्त्र का निर्माण नहीं कर सकता क्योंकि दोनों के मूल्य, मान्यताएँ एवं अवधारणाएँ एक-दूसरे के विपरीत हैं। बहुजन चेतना सामाजिक परिवर्तन की चेतना है। यह चेतना बहुजन के अधिकारों एवं न्याय दिलाने के लिए किए गए प्रयासों की प्रतिबद्ध चेतना है। जो घृणा, विद्रोह एवं अमानवीय यातनाओं से पैदा हुई है।

भीम रहिया प बहुजन चलत नइखे // भोजपुरी लोक एवं बहुजन अस्मिता

भोजपुरी लोक की बहुजन अस्मिता की शुरुआत कबीर से होती है। कबीर स्पष्ट कहते हैं – 'जात पात पूछे न कोई/ हरि को भजे सो हरि का होई।' ईश्वर प्राप्ति के लिए जाति-धर्म को कोई नहीं पूछता है। ख़ुद ईश्वर भी नहीं। भक्तिकालीन कबीर सरीखे सभी निर्गुणवादी संत बहुजन चेतना से लबरेज थे। सभी को अपने समाज और अपने पेशे पर गर्व था। भोजपुरी लोक में आधुनिक बहुजन कवियों में मारकंडे दास, रसूल मियाँ, भिखारी ठाकुर, हीरा डोम, जगरदेव, बिहारी राम, नारायण महतो, कुंजन, परगन राम, जनकवि बावला इत्यादि चर्चित रहे हैं। इनमें से भिखारी ठाकुर, रसूल मियाँ और हीरा डोम से हिंदी जगत परिचित होगा लेकिन शेष अज्ञात हैं। राहुल सांकृत्यायन ने अपने हिंदी साहित्य की तरह भोजपुरी नाटक *जोंक* में भी बहुजन चेतना को स्वर दिया है :

> स्वारथ के जोड़ी-जोड़ी पोथिया बनवलस बभना गइल सतनासी
> झूठ तोर सधुआ करमवा झूठ ब्रह्मा के कासी।[12]

1934 में जन्मे कथनथ (सासाराम) के आशु कवि परगन राम ने अपनी भोजपुरी में बहुजन विमर्श का गीत गाया है :

---

[10] प्रमोद रंजन और आयवन कोस्का (सं.), (2017) : 14.

[11] शरण कुमार लिंबाले (2005) : 116.

[12] राहुल सांकृत्यायन (1943) : 73.

> अपना मतलब से वेदशास्त्र बनावल गइल बा।
> देके ईश्वर के नाम डेरावल गइल बा।
> सत चित आनंद मिलल त सच्चितानंद कहाइल।
> अइसन ईश्वर के सृष्टि में दुःख कहाँ से आइल?[13]

रामजियावन दास 'बावला' ने भी पूछा कि वास्तव में किसे आज़ादी मिली :

> के के आपन खून बहावल/के आपन सर्वस्य लुटावल/केकरे लड़िका बने कलेक्टर,/ई ओस्तादी पउलस के/ सोचा, आज़ादी पउलस के?[14]

भोजपुरी के दलित कवियों को लेकर डॉ. राजेंद्र प्रसाद सिंह ने 'आधुनिक भोजपुरी के दलित कवि और काव्य' नामक किताब लिखा है। इन्होंने इन कवियों के लिए जिन विशेषणों से मूल्यांकन किया है, वह उल्लेखनीय है, मसलन, 'व्यंग्य बोध के विराट कवि कुंजन', 'जनता की याददाश्त में जीवित कवि परगन राम', वयस्क शृंगार के अकुंठ कवि जगरदेव, 'सामंतों की तनी तोपों के बीच मुसहर कवि बिहारी राम', 'भोजपुरी के तथाकथित नक्सली कवि नारायण महतो' और 'विंध्याचल घाटी के घुमंतू जनकवि बावला' मुख्य हैं।' ये सभी कवि बहुजन समाज में सूचना प्रौद्योगिकी के आगमन से पहले के हैं।

जिस रफ़्तार से नई टेक्नॉलॅजी तकनीकि का विकास हो रहा है, उसी रफ़्तार से दृश्य संस्कृति में अश्लील, जातिवादी, सांप्रदायिक कथ्य बहुजन युवकों को अपनी चपेट में ले रहा है। इतिहासकार सुभाषचंद्र कुशवाहा की फ़ेसबुक पर ग्रामीण बहुजन युवाओं पर की गई पोस्ट इस संबंध में चिंतित करती है – 'गाँव की पूरी की पूरी युवा आबादी, घोर लंपटई की गिरफ़्त में है। पढ़ाई-लिखाई से नाता टूट चुका है। देश-दुनिया की कुल समझ व्हाट्सएप से बनी है। वहाँ पाकिस्तान माफ़ी माँगता है और चीन थरथर काँपता है। दहेज़ में बाइक मिली है, भले ही पेट्रोल महँगा है, धान-गेहूँ बेच, एक लीटर भरा ही लेते हैं और गाँव में एक बार फटफटा लेते हैं। गँवई माफ़िया उनका इस्तेमाल करते हैं। उन्हें आखेट कर किसी-न-किसी धार्मिक सेनाओं के पदाधिकारी बना कर, अपनी गिरफ़्त में रखते हैं। हमारे गाँव के उत्तर में बढ़ई टोला है। वहाँ से अक्सर कुछ युवाओं के फ्रेंड रिक्वेस्ट आते हैं। उनकी हिस्ट्री देखिए तो सिर पर रंगीन कपड़ा बाँधे, जयकारा लगाते, मूर्ति विसर्जन में दारू पीते फ़ोटो मिलेगी। यह है नई पीढ़ी! इसी पर है देश का भविष्य। एक बीमार समाज। ऐसी पीढ़ी अपने बच्चों को कहाँ ले जा रही है? ज़मीन-जायदाद इतनी नहीं कि ठीक से घर चला सकें या बीमारी पर इलाज हो। तो इनके लिए बेहतर जीवन क्या है? ये किसी औघड़ सेना के सचिव हैं तो किसी धार्मिक संगठनों में फँसा दिए गए हैं। इनकी पीढ़ियाँ अब उबरने वाली नहीं। दास बनने को अभिशप्त हैं ये।... इनका कोई स्वप्न

[13] *भोजपुरी ज़िंदगी* (2014) : 12.

[14] वही :13.
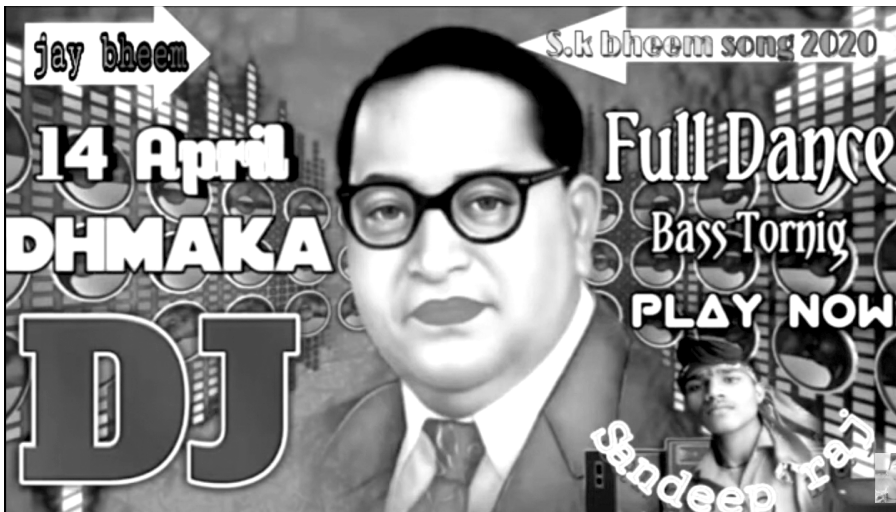
नहीं।... अब ऐसे मर रहे समाज में जान फूँकना आसान काम नहीं है? अब सवाल उठता है कि जिस समाज को सचेतन ढंग से बर्बाद किया गया हो, शिक्षा से वंचित किया गया हो तो यह सचेतन ग़ुलाम बनाने का कृत्य है। यह अमानवीय भी है और शातिराना भी।'[15] और जो पढ़-लिख कर अपनी शारीरिक मज़बूती की बदौलत किसी सुरक्षाबल में सरकारी नौकरी करते हुए जो धन कमाया उसने तीर्थ यात्रा कर, प्रचार किया कि सब भगवान की कृपा है। इस बात से अनपढ़ समाज भगवान की भक्ति से पैसा कमाने की बात करता है। इसीलिए वे सोचते हैं कि बिना भगवान के कुछ होने वाला नहीं है। भगवान के नाम पर समाज को बीमार बना दिया है। हालाँकि बहुजन समाज की तस्वीर का यह एक पहलू है, इसके दूसरे पहलू में बहुजन सामाजिक रूप से जागरूक हैं। भीमगीत गायक उसी जागरूकता के शीर्ष हैं। जिनके लिए गुमराह बहुजन नौजवानों को राह पर लाना, सांप्रदायिक दिमाग़ को सेकुलर बनाना, चमत्कारी एवं अंधविश्वासी मन में वैज्ञानिक चेतना भरना इत्यादि यह सब बेहद चुनौती भरा काम है। यह कठिन काम कैसे संभव होगा, जब भोजपुरी लोक का बहुजन सामाजिक-सांस्कृतिक रूप से ही नहीं, बल्कि राजनैतिक रूप से भी दिशाहीन है। पत्रकार जितेंद्र कुमार लिखते हैं – 'उत्तर प्रदेश और बिहार में दलित, बहुजन और अल्पसंख्यकों ने मिलकर बीजेपी को सत्ता से कमोबेश बाहर ही रखा, लेकिन तथाकथित सामाजिक न्याय की ताक़तें हर दिन कमज़ोर होती गईं। जबकि बीजेपी सत्ता से दूर रहकर भी सामाजिक-राजनीतिक रूप से मज़बूत होती चली गईं। इसी का परिणाम हुआ कि पिछले तीस वर्षों में वे ताक़तें न केवल जीर्ण-शीर्ण अवस्था में पहुँच गईं बल्कि हिंदुत्व के फ़ोर्स को कोई चुनौती देने की स्थिति में भी नहीं रह गया है।'[16] सामाजिक न्याय की राजनीति करने वालों ने सत्ता के वैकल्पिक मॉडल की बात ही नहीं

[15] https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=3534775746541397&id=100000270181351.

[16] https://junputh.com/column/raag-darbari-on-decay-of-social-justice-politics-in-up-and-bihar/.

सोची। उन्हें आज भी यही लगता है कि सत्ता मिलते ही सब कुछ नियंत्रित किया जा सकता है जबकि हक़ीक़त यह है कि कुर्सी सत्ता तंत्र का एक पुर्जा मात्र है जिसमें अन्य कई पुर्ज़े लगे होते हैं। अपने सत्ता काल में इन ताक़तों ने वैकल्पिक मीडिया बनाने की बात नहीं सोची। लालू, मुलायम, मायावती और हेमंत सोरेन जैसे नेताओं के पास अपनी पार्टी का एक रेगुलर मुखपत्र तक नहीं रहा है जिसके द्वारा वे अपने समर्थकों से संवाद स्थापित कर सकें।[17] बावजूद इसके भीमगीत के गायकों ने इंटरनेट की दुनिया में अपने बहुजन समाज में जागृति के लिए जिस तत्परता से कमर कसा है, वह आंदोलन का रूप ले चुका है।

जाति-पाति के भेदवा मिटवल हो // भोजपुरी भीमगीतों की सामाजिकता

आज भारत का ग्रामीण समाज भी आभासी दुनिया में जीने लगा है। इसमें हर कोई अपनी वैयक्तिक से लेकर सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक छवि की निर्मिति के साथ उपभोग भी कर रहा है। डिजिटल दृश्य संस्कृति हमारे ध्यान को सिनेमा और आर्ट गैलरी के बजाए रोज़मर्रा के जीवन के दृश्य अनुभव पर केंद्रित करती है। यह संस्कृति हमारी रोज़मर्रा की ज़िंदगी की हिस्सा बन चुकी है अर्थात हमारे जीवन में सब कुछ स्क्रीन पर घटित हो रहा है। हमारा जीवन अब निरंतर वीडियो के साथ और उसकी निगरानी में चल रहा है। वर्चुअल दृश्य संस्कृति हमारे निजी जीवन से लेकर सामाजिक और आर्थिक जीवन में भी अहम भूमिका निभा रही है। इसने हमारे दैनिक जीवन के व्यवहार को बदल दिया है। दृश्य संस्कृति भी ज्ञाना-नुशासनों के स्थापित स्रोतों, विशेष रूप से लिखित दस्तावेज़ों के समानांतर एक सशक्त स्रोत बन चुकी है। यह स्रोत अपने पूर्ववर्ती स्रोतों की अपेक्षा लोकतांत्रिक है क्योंकि यह सर्वसुलभ है और इसने हरेक के लिए अभिव्यक्ति से लेकर इस्तेमाल का मौक़ा दिया है।

आभासी दृश्य संस्कृति में आंबेडकर को सहेजने से पूर्व आंबेडकरवादियों ने सृजनात्मक तरीक़ों से मूर्तियाँ बनाकर, आंबेडकर जयंती से लेकर महापरिनिर्वाण दिवस मनाकर और मौखिक परंपरा से लेकर लिखित परंपरा में भीमगीत रचकर ज़िंदा रखा। भीम मेला और भीमचर्चा में गाँव-गाँव से बहुजन स्त्री-पुरुषों का झुंड टेंपो-ट्रैक्टर पर सवार होकर भीमगीत गाते हुए आने लगा है। लेकिन उससे सशक्त आभासी दुनिया में सबसे सहज एवं सर्वसुलभ रूप में आंबेडकर की प्रतिदिन सर्जना हो रही है। इस मिशन में भीमगीत गायक अपनी बदहाली में भी हमेशा कमर कसे रहता है।

भोजपुरी भीमगीत का फ़लक बहुआयामी है। लेकिन यहाँ भीमगीतों के केंद्र में बहुजन नायकों के जीवन का चित्रांकन, परंपरागत मिथकों की बहुजनवादी व्याख्या, मनुवाद से वैचारिक संघर्ष, सामाजिक कुरीतियों पर चोट, अतीत से लेकर वर्तमान की घटनाओं पर रचनात्मक टिप्पणी एवं रोज़मर्रा के जीवन में होनेवाली हलचल इत्यादि के बारे में चर्चा करने की कोशिश की गई है।

[17] वही.

भोजपुरी भीमगीतों में बाबा भीम की अनगिनत छवियाँ हैं। कहीं भीम हर बहुजन के घर पैदा होने वाले बालक बन गए हैं, कहीं किसी मनुवादी को बौद्धिक चुनौती दे रहे हैं, कहीं नीला सूट-बूट पहने हाथ में संविधान लिए खड़े हैं, कहीं बहुजन समाज के खेवइया रूप में हैं, कहीं विश्वरत्न तो कहीं देशरत्न हैं, कहीं भारतरत्न हैं तो कहीं बहुजन के शरीर रूप में हैं,[18] कहीं पूरे देश के नेता हैं,[19] कहीं देश के मसीहा[20] हैं। इसी तरह महात्मा बुद्ध, जोतिराव फुले, पेरियार, ललई सिंह यादव, कांशीराम जैसे लोकप्रिय बहुजन नायकों की जीवन छवियों को भीमगीत दृश्यांकित करता है।

डॉ. आंबेडकर की विरासत को सहेजने वाले भीमगीत गायकों से टेलीफ़ोनिक बातचीत सृजनशील बहुजन की सामाजिकता को सामने लाता ही है, इसके साथ डॉ. आंबेडकर इन गायकों के पास कैसे पहुँचते हैं जैसे प्रश्न भी दिलचस्पी पैदा करते हैं। अनुभवी भीमगीत गायक पहले से ही हिंदू पौराणिक कथाओं का गायन करते रहे हैं लेकिन भीमचर्चा ने उनके गायन की दिशा ही बदल दिया। बिरहा-शैली के भीमगीत गायक राजकुमार यादव बताते हैं कि 'बचपन से संगीत से लगाव था। शुरू में अपनी बिरहा गायकी में *रामायण*, *महाभारत* जैसी पौराणिक कहानियाँ गाता था लेकिन जब बाबा भीम राव आंबेडकर के जीवन के बारे में जानने-सुनने को मिला तो पता नहीं कब मेरे विचार बदल गए। आज आंबेडकर के आगे सब फ़ेल है। आंबेडकर के अलावे उनके धारा के जितने भी संत-विचारक थे, उनके बारे में पढ़ना-सुनना मन को भाता गया और धीरे-धीरे मेरी बिरहा गायकी में कहानियों की दिशा बदलती गई। शोर गीतों (जो भीमगीत नहीं हैं) को छोड़कर अपने बिरहा गायकी में मुझे भीमगीत गायकी से काफ़ी सुकून मिलता है।'[21] राजकुमार भीमगीतों के बारे में फ़ख्र से बताते हैं जबकि ढाई-तीन वर्षों से भीमगीत लिखने वाले 26 वर्षीय मनोज कुमार, जो दलित समुदाय से ताल्लुक़ रखते हैं, फ़ोन पर पहले सशंकित थे, इन पंक्तियों के लेखक द्वारा अपने बारे में विस्तार से बताए जाने पर भी डरते-डरते बताते हैं – 'मैं मैट्रिक तक पढ़ा हूँ। घर के हालात ठीक नहीं थे, इसलिए बेल्डिंग का काम करके घर चलाता हूँ। स्कूल टाइम में मैंने बाबा साहब का नाम सुना था लेकिन उनके बारे में ठीक से जानकारी देने वाला कोई नहीं था। बाबा साहब के बारे में 6-7 साल पहले जानकारी मिलनी शुरू हुई तो सोचा कि भीमगीत लिखकर अपने समाज में जागरूकता लायी जाए। पहले भोजपुरी गीत लिखता था, लेकिन बाबा साहब का जीवन और विचार जानने के बाद बाबा साहब के मिशन से जुड़ना जीवन का लक्ष्य बना लिया।'[22] इस मिशन में मनरेगा मज़दूर गुलशन कुमार[23] भी दो सालों से अपने गीतों के माध्यम से सहयोग

[18] https://youtu.be/kSK80pQZn9Y.

[19] https://youtu.be/wfDkkXaaJIM.

[20] https://www.youtube.com/watch?v=XK_M_Ai9WhY&list=RDXK_M_Ai9WhY&start_radio=1.

[21] 22 अगस्त, 2020 को फ़ोन पर बातचीत.

[22] 22 अगस्त, 2020 को फ़ोन पर बातचीत.

[23] 21 अगस्त, 2020 को फ़ोन पर बातचीत.

दे रहे हैं। जबकि ग्यारहवीं क्लास के विद्यार्थी सुधीर यादव को भोजपुरी के अन्य गीतों की अपेक्षा भीमगीत गाने पर इज़्ज़त मिलती है।[24] समाजशास्त्री अंतोनियो ग्राम्शी ने कहा था कि किसी भी आंदोलन का आधार एक सांस्कृतिक विचारधारा होती है। यह सांस्कृतिक विचारधारा ही किसी बड़ी राजनीतिक शक्ति का आधार होती है। बहुजन महासंघ, रिपब्लिकन पार्टी ऑफ़ इंडिया (आरपीआई) और बहुजन समाज पार्टी (बीएसपी) से लेकर अन्य हाशिये के लोगों के लिए (भीमचर्चा इत्यादि) कई सांस्कृतिक दस्ते भी इन गीतों के माध्यम से आंबेडकरवादी विचारों का प्रचार रैलियों में करते रहे हैं।

सांस्कृतिक विचारधाओं में मिथक की उपस्थिति सबसे ताक़तवर रूप में प्रवाहित होती है। आंबेडकरवादी विचारणा मानती है कि स्थापित और आदर्श के रूप में प्रस्तुत की गई सांस्कृतिक संरचनाओं को तोड़े बिना स्थापित प्रभुत्व को तोड़ा नहीं जा सकता। हिंदी क्षेत्र में स्वामी अछूतानंद, चंद्रिकाप्रसाद जिज्ञासु और ललई सिंह द्वारा शंबूक, *नाग यज्ञ और एकलव्य* पर लिखे गए नाटकों को पढ़कर ब्राह्मणवाद के ख़िलाफ़ बहुजन में जागरण हुआ था। जिनके प्रभाव से बिरहिया नसुड़ी यादव[25] *रामायण*, *महाभारत* से लेकर प्रभुत्वशाली स्थानीय मिथकों को भी तार्किकता से प्रस्तुत करते थे। बिरहा गायकी में वे इतने लोकप्रिय थे कि बिरहा गाने जहाँ भी पहुँचते, वहाँ मिथकों और कर्मकांडों का धुर्रा उखाड़ देते। बिरहा का सबसे रूढ़ और पोंगा पक्ष यह था कि इनके अखाड़े को छोड़कर तीनों अखाड़े भले ही भक्ति, सौंदर्य और वीरता की गायकी की अपनी विशेषताओं से चारों ओर चमक बिखेर रहे हों लेकिन उनका मूल चरित्र एक ही था। तीनों बनी-बनाई सांस्कृतिक मान्यताओं और धारणाओं को कोई चुनौती नहीं देते थे। लेकिन नसुड़ी तर्क से मिथकीय व्यक्तित्व का साधारणीकरण कर देते और लोक की निगाह में उनका मुलम्मा उतार देते। 'ब्रह्मा मुँह से बच्चा पैदा होने वाली कहानी को नसुड़ी अपने देसी अंदाज़ में पूछते थे – 'हम तो बच्चा पैदा होने का एक ही रास्ता जानते-सुनते हैं भिया। का इहाँ बैठे लोग किसी और रस्ते के बारे में जानते हैं क्या? जनता के बीच से शोर उठता– नाहीं! तब? नसुड़ी फिर उस बिरहिया से पूछते– तब तू कवन दूसर रस्ता देख लेहला कनचोदऊ। बताव। बताव जल्दी नाहीं त रम्मा लाल हौ!' इतने पर तो जनता नसुड़ी पर अपने को लुटा देती और बाजी ही पलट चुकी होती। 'रम्मा लाल हौ'! नसुड़ी का तक़ियाकलाम था। हालाँकि यह केवल एक मज़ाक़िया जुमला भर था लेकिन इसका अर्थ बहुत व्यापक और चिंतनीय है। लाल रम्मा यानी आग में तपाया गया सब्बल जिसको छूकर कोई भी अपने साहस और सफ़ाई का परिचय दे सकता है। जलता हुआ सब्बल किसी को जला देने के लिए है। यहाँ इसका अर्थ अग्निपरीक्षा है यानी नसुड़ी अपने मुक़ाबले में खड़े गायक से कहते हैं कि जो तुम बात कह रहे हो वह झूठ

[24] 21 अगस्त, 2020 को फ़ोन पर बातचीत.

[25] नसुड़ी यादव (सन 1948-2001), भोजपुरी पट्टी में भीमगीत के पहले गायक हैं. उन्हें सुनने के लिए इतने लोग आते थे कि बिरहा का मंच अररा जाता. बीच में जगह न मिलती और भीड़ चारों ओर फैलती जाती. मुक़ाबला जितने बड़े कलाकार से होता, उतना ही नसुड़ी का जलवा अधिक होता. कहा जाता है कि उनके गायन के समय अक्सर मार हो जाती थी क्योंकि अपने बिरहा के माध्यम से वे मनुवाद का बखिया उधेड़ते रहते थे. इसलिए अपनी सुरक्षा के लिए साथ में पिस्तौल भी रखते थे.

है। तर्क से उसे साबित करो अन्यथा अग्नि परीक्षा दो।'[26] नसुड़ी की भाँति परंपरागत मिथकीय गाथाओं की बहुजनवादी पाठ करने वालों में काशीनाथ यादव, पारसनाथ यादव, बेचन राजभर, राजकुमार यादव, कंचन काजल बौद्ध, सरोज त्यागी इत्यादि का नाम उल्लेखनीय है। इन गायकों की मज़बूत, तीखी और सुरीली आवाज़ जाति-विरोधी आंदोलन और उसके चुनौतीपूर्ण वर्तमान और अतीत को एक साथ रखती है। बिरहा या अन्य शैली के भीमगीत गायकों में कोई मुस्लिम या पसमांदा गायक नहीं हैं। यह हैरानी हो सकती है लेकिन किसी मुस्लिम गायक के लिए भीमगीत गाना आफ़त मोल लेने से कम नहीं होगा। उसकी भीमगीत गायकी सांप्रदायिकता की भेंट चढ़ जाएगी। फिर सवाल बहुजनवाद का न होकर हिंदू बनाम मुस्लिम हो जाएगा। परंतु भोजपुरी भीमगीतों में मुस्लिम समुदाय के प्रति भाईचारे की अभिव्यक्ति ज़बर्दस्त हुई है। इसका बेहतरीन उदाहरण है – नसुड़ी यादव का बिरहा 'ग़ाज़ी मियाँ और राजा बन्नार' की कहानी। यह मात्र हिंदू-मुस्लिम एकता की दास्तान भर नहीं, बल्कि गाज़ी मियाँ के वक़्त बनारस-बहराइच का इतिहास भी रचती है।

बहुजन चेतना एक प्रति सांस्कृतिक चेतना है और एक वैकल्पिक चेतना भी। इसलिए विद्रोही है। इस चेतना की जड़ में भारतीय हिंदू समाज की वह संरचना है जो न केवल जाति-आधारित है बल्कि इसे धार्मिक वैधता भी मिली है। भीमगीत गायकों को अतीत या वर्तमान में घटित घटनाओं को सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक संदर्भों में व्याख्यायित करने का विवेक अपने बहुजन नायकों से मिला है। इसलिए भीमगीत अतीत में हुए स्त्री उत्पीड़न को बड़ी बारीकी एवं पैनी दृष्टि से देखता है :

[26] विस्तार से जानने के लिए रामजी यादव का लेख देखिए- https://junputh.com/column/gaahe-bagaahe-nasudi-yadav.

दलित नारियन के हाल सुन एही देसवा में।
बाटे मनुवदियन से सवाल एही देसवा में।
सभा बीच द्रोपदी होत रही उघारी।
सुनि के पुकार दउरल अइले बनवारी।
साड़ी बनके कइले कमाल एही देसवा में।[27]

गायिका सरोज त्यागी का कहना है कि यह बात मनुवादी कहते हैं लेकिन डेढ़ सौ साल पूर्व केरल के त्रावणकोर में दलित स्त्रियों को स्तन ढँकने पर स्तन के बराबर वजन का टैक्स देना (मुलाकरम) देना पड़ता था।

सामने पड़े जो पुरुष अउर बड़की जाति।
दलित नारी खोल के देखावे आपन छाती।
तोपला प पापी खींचे खाल एही देसवा में।[28]

इस मुलाकरम प्रथा के ख़िलाफ़ नांगेली नामक दलित स्त्री ने टैक्स चुकाने के लिए अपने स्तन काटकर प्रतिरोध किया था। भीमगीत अपनी वर्तमानता को दर्ज करते हुए प्रतिरोध कर रहा है कि आज भी दलित स्त्री को सम्मान नसीब नहीं है। हाथरस हो या बलरामपुर या देश में कहीं और की घटना। हर जगह दलित-बहुजन स्त्री का बलात्कार होता है, रीढ़ की हड्डी तोड़ी जाती है, जीभ काट ली जाती है, मर भी गई तो घर वालों को दाह-संस्कार का हक़ भी नहीं मिला। और तो और, अब हत्यारों के समर्थन में पंचायत ही नहीं, जुलूस भी निकालने लगा है मनुवादी समाज।[29] अक्सर मनुवादी कुंठा में बाबा भीम की मूर्तियाँ तोड़ता है, उस कुंठा को भीमगीत चेतावनी देता है :

बाबा साहेब के मूर्ति के तुरबे जे जबरी,
कि हमार वादा बा कि नीला झंडा तोरा छाती प फहरी।
ढेर अब कइले अत्याचार मनुवादी
हरदम करेले काहे के जातिवादी, ...
पहिले से ज़्यादा अब जागल मोर समाज बा।[30]

इधर गायक बेशक मनुवादी वर्चस्व को चुनौती देते हुए अपने समाज को जागरूक बता रहा है परंतु उसका समाज आज भी दारू के नशे में सोया ही है। लोकगीतों में नशाखोरी[31] बहुत पहले से उठाया जाता रहा है। भिखारी ठाकुर का इस समस्या पर 'कलजुग प्रेम' (*पिया निसइल*) नाटक लोकप्रिय हुआ था। लोकगायक मुन्ना सिंह का 'मिलल बा शराबी सैया,

---

[27] https://youtube/Ls0LFnLO2hM.

[28] वही.

[29] https://youtu.be/s5n0z9FvGBU.

[30] https://youtu.be/z0qCeV5td0Q.

[31] बिहार में पिछले पाँच वर्षों से शराबबंदी ग्रामीण क्षेत्रों के लिए अपने शुरुआती दौर में वरदान साबित हुई थी.

नसवे में चूर हे अरे'[32] बहुत चर्चित था। भीमगीत के चर्चित गायक तारकेश्वर राव टंडन ने अभिनय करते हुए नशाखोरी पर व्यंग्य किया है। बहुजन पत्नी पति से शिकायत कर रही है –

बेंचि दिहले लोटा बरतनवा, सखी मोर पियक्कड़ सजनवा।
बेंचि दिहले सगरो गहनवा, सखी मोर सराबी सजनवा।

पत्नी समझाती भी है कि यह तो भीमजी की देन है कि उसका पति अच्छा कपड़ा पहनता है, अंग्रेज़ी दारू पीता है। वो आग्रह करती है कि पति भीमचर्चा में चले। वहाँ अच्छी-अच्छी बातें सीखने को मिलती हैं। 'सोचली इनिके लिया जाइ भीमचर्चा में, जाई के लुका गइले लाला के बगइचा में।/ डर लागे नास दीहें मिसनवा, सखी मोर सराबी सजनवा।' बेबस होकर बोलती है कि बाबा साहेब इतना समझा गए हैं, फिर भी इन्हें कुछ भी समझ नहीं आ रहा है। एक तो मनुवाद हमारा दुश्मन रहा है, ऊपर से पति की नशाखोरी परिवार को बर्बाद करने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ती है। पीना ठीक नहीं है। घर की मर्यादा चली जाती है, मान-सम्मान चला जाता है, घर लुट जाता है।[33]

वहीं दूसरी ओर बहुजन शिक्षित हो कर भारतीय संविधान के तहत आरक्षण से नौकरी पाता है, जिसे कामयाबी के रूप में बाबा भीम की इस देन को भीमगीत बखूबी स्वीकारता है – 'भीमजी के दिहल ह नौकरिया'।[34] लेकिन बहुजन समाज के कुछेक लोग संस्कृतीकरण के बहाव में आकर बाबा भीम के एहसान को सरेआम नहीं स्वीकारते :

जय भीम कहे में, काहे लाज लाग ता।
तनी कर सरम, तोहार फूटल करम, बाङ कवना भरम, बुझ बाबा के मरम।
तोहरा जेबवा में आज जवन पेन बा, उ हमरा भीम बाबा के देन बा।[35]

यह ऑटो ट्यून का ऑडियो गारी भीमगीत आत्मगौरव के बोध के साथ अतीत में हुए दलित उत्पीड़न की दृश्यावली भी प्रस्तुत करता है। झाड़ू कमर में बँधा होता था, दर-दर ठोकर खाते थे। मर-मरके गुलामी सहते थे, आँखों से अँसुवा झर-झर गिरता था, आज भीमजी की वजह से फ़ेसबुक चलाते हो, गोबर गणेश की पूजा करते हो, फिर भी महेश ख़ुश नहीं होते, हमेशा कलेस में ही रहते हो। अब तो अपना परिवेश बदलो। तुम्हारे तन पर जो कपड़ा है, इन सबके लिए बाबा भीम ने कितना पापड़ बेला था! हमारे पूर्वजों की यही कहानी थी, उन्हीं के लिखे भारतीय संविधान में हमें मान-सम्मान मिला है। नौकरी मिली है और आरो का पानी पीने को मिल रहा

---

[32] https://www.youtube.com/watch?v=5l4_rjypuuQ.

[33] https://www.youtube.com/watch?v=_F8p3XZa1gs.

[34] https://www.youtube.com/watch?v=3cLsKaQL22k&list=RD8GSQJ5lsRLY&index=5.

[35] https://www.youtube.com/watch?v=x0M9S9dCE6s&list=RDhYV4w2qD9a8&index=4.

है।'[36] बाबा भीम या फिर मंडल कमीशन के बदौलत दलित-ओबीसी श्रेणी में छोटी-बड़ी सरकारी नौकरी पाने वालों में अधिकांश ऐसे लोग हैं जो डॉ. आंबेडकर या मंडल कमीशन का नाम लेना ख़ुद को तौहीनी समझते हैं। उपर्युक्त गीत इसी हीनभावना से ग्रस्त बहुजन को लक्षित करता है।

परिवार में स्त्री सशक्तीकरण का विमर्श भोजपुरी भीमगीतों में मुखर नहीं है। मिशन गायिका मालती बौद्ध की टेलोफ़ोनिक वार्त्ता दलित स्त्री की स्थिति पर प्रकाश डालती है – 'मैं पिछले बारह सालों से भीमगीत गा रही हूँ। मेरे घर में सभी बाबा भीम की विचारधारा को मानते ही नहीं बल्कि समाज में जागृति लाने के लिए सक्रिय भी हैं। हम सभी पढ़े-लिखे हैं और नौकरीशुदा भी। मैं नर्स हूँ। हमने बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया है। जब मैं ब्याह के आयी तो गीतों के माध्यम से बाबा भीम के विचारों को अपने लोगों तक पहुँचाने के लिए घर में प्रस्ताव रखा। मेरे ससुर ने, वेल एजूकेटेड होने के बावजूद, सार्वजनिक रूप से गाने की अनुमति नहीं दी। कहा कि गाना है तो घर में गाओ, बाहर जाने की क्या ज़रूरत। इसके लिए मुझे और मेरे पति को घर से निकाल दिया गया।'[37] जब जागरूक एवं मध्यवर्गीय बहुजन घर में स्वावलंबित स्त्री के प्रति यह व्यवहार है तो फिर आम बहुजन स्त्री के प्रति किए जाने वाले बर्ताव के बारे में समझा जा सकता है। अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में भीमगीत की स्त्री अपने पति पर ही आश्रित दिखती है, वह ख़ुद स्वावलंबित नहीं है, वह पति से ही पंचशील[38] साड़ी की माँग कर रही है। भले ही शादी से पूर्व युवक ऐसी ही आंबेडकरवादी जीवनसाथी की चाहत रखता हो और जो बौद्ध धर्म की रस्म से विवाह करना चाहता हो – 'लड़की चाहीं आंबेडकरवादी।'[39] ऑडियो भीमगीतों में पंचशील साड़ी की चर्चा मुख्यतः स्त्री के बारे में है, लेकिन दृश्यों में स्त्री-पुरुष दोनों पंचशील टाई को गले में पहने हुए दीखते हैं :

> सईंया पंचशील के साड़ी हमें मंगाई द, कि जय भीम लिखवाई द।
> धनिया का तू करबू हो कि हमके समझाई द नू हो।
> जाइम हम भीम चरचा करे, मत जा तू रह घरे।[40]

पंचशील चिह्न भीमगीतों में एक नैतिक मूल्य बनकर आता है। जिसका पालन सभी को करना चाहिए।

जैसे कोरोना महामारी ने संवेदनहीन भारतीय समाज को बेपर्द कर दिया है, भीमगीत गायकों के लिए यह महामारी संदेश के एक बहुत बड़े माध्यम के रूप में भी उभरी है मतलब

---

[36] वही.

[37] 5 सितंबर, 2020 को टेलीफ़ोनिक बातचीत.

[38] बौद्ध धर्म में पंचशील चिह्न पाँच ऐसे नैतिक वादों का एहसास दिलाता है कि आप — एक, अकारण किसी पर हिंसात्मक कार्रवाई नहीं करेंगे. दूसरे, बिना किसी को कुछ दिए नहीं लेंगे. तीसरे, नैतिक रूप से कोई अनैतिक कर्म नहीं करेंगे. चौथे, झूठ नहीं बोलेंगे और पाँचवें, ऐसी किसी वस्तु का सेवन नहीं करेंगे, जिससे मस्तिष्क में विकार पैदा हो.

[39] https://youtu.be/1CVTN7Sco6M बहुजन डीजे भीमगीतों में यह सबसे अधिक बजने वाला गीत है, जिस पर लड़के डांस करते हैं.

[40] https://www.youtube.com/watch?v=PjwNKrkzCcQ.

कहें कि भीमगीत ने भी 'आपदा में अवसर खोज'[41] लिया है! बिरहा भीमगीत गायक पूछ रहा है कि कोरोना के कहर में भारत के छप्पन हज़ार देवी-देवता कहाँ लुका (छुप) गए? मंदिर, मस्जिद से लेकर गुरुद्वारों में ताला लग चुका है। जहाँ खुला है, वहाँ के देवता को भी कोरोना बीमारी ने अपनी चपेट में ले लिया है। जो ख़ुद अपनी रक्षा नहीं कर सकते हैं, वो हम मनुष्यों की रक्षा कैसे कर पाएँगे।[42]

बेशक दलितों की तुलना में पिछड़ा समुदाय मनुवादी संस्कारों में ज़्यादा जकड़ा हुआ है। निम्नलिखित गीत में दलित-पिछड़ा में एका नहीं होने का दर्द छलक रहा है :

ओबीसी त बतिया बुझत नईखे।
नजरी से देखला सूझत नइखे।...
रोजे जियते नीलाम होइहें।
घरे में पंडा बोलाव ताटे,
कर्मकांड करवा ताटे,
देले गठरी में पइसा बाँधी के हो।
इहे करे मज़बूत मनुवादी के हो।[43]

इस ऑटो ट्यून वीडियो गीत में खड़ी कार प्राइड के रूप में उभरती है और कार के आगे डांस करता जोड़ा कर्मकांडी संस्कार पर कटाक्ष करते हुए ओबीसी समुदाय को जागरूक करने के लिए एहसास कराता है कि घर में बिना पंडा बुलाये, बिना कर्मकांड के, बिना दान-दक्षिणा दिए भी हम ख़ुद को समृद्ध कर सकते हैं।

इस तरह भोजपुरी लोकवृत्त में भीमगीत न केवल बहुजन चेतना को जागरूक करने में बल्कि मनुवादी समाज को हर मोर्चे पर चुनौती देने में बहुआयामी है, जो उत्पीड़न की आह से लेकर विद्रोह के स्वर के ऐतिहासिक छवियों को दृश्यांकित करता है।

भीमजी अइले अब नेट पर // भीमगीतों की प्रस्तुति-शैली

कहना न होगा कि बहुजन प्रतिभा, कौशल और आंतरिक-बल आदिकला के विभिन्न स्वरूप, साहित्य, संगीत, कविता इत्यादि की उत्पत्ति शूद्रों एवं आदिवासियों के जन-जीवन से हुई है। अपने आविष्कारशील प्रतिभा और प्रदर्शन के उत्साह में बहुजन ने अपनी त्रासदियों को संगीत में पिरोया ही नहीं अपितु ख़ुद अस्पृश्य होने की यातनाओं को भी अपनी संस्कृति में संरक्षित किया है। भारत के लगभग सभी शास्त्रीय कलाओं का उद्भव बहुजन के जन-जीवन में दिखता है। बहुजन संस्कृति की नक़ल और संस्कृतिकरण के बहाने उसके ब्राह्मणीकरण की प्रक्रिया भी कम नहीं हुई है या यूँ कहें कि बहुजन कलाओं को वर्चस्ववादियों ने ख़ूब हथियाया है।

---

[41] प्रस्तुत नारा अपने प्रकृति में कितना अमानवीय है! ऐसा विचार पूंजीवादी तानाशाही तंत्र के भीतर से ही पैदा हो सकता है.

[42] https://youtu.be/Ml6Kr4teF4U.

[43] https://youtu.be/o19SS3Ru_Vc

जबकि बहुजन को विभिन्न कलाओं में भाग लेने और अभ्यास करने से रोका जाता रहा है। दो हज़ार साल पहले लोकवादी भरतमुनि को भी बहुजन के लिए वर्जित मनुवादी संस्कृति अमानवीय लगी थी। जिसमें बहुजन को पढ़ने का अधिकार नहीं था। इसी विचार से प्रेरित होकर उन्होंने *नाट्यशास्त्र* की रचना की। *नाट्यशास्त्र* के प्रथम अध्याय में ही उन्होंने लिखा कि 'वेद का व्यवहार एवं उसका श्रवण करना शूद्र जाति के लिए निषेध है। इसलिए पंचम वेद के रूप में ऐसे वेद का सृजन किया जा रहा है, जो सभी के लिए है' (नाट्यशास्त्र, 2023)। अर्थात भरतमुनि ने *नाट्यशास्त्र* के माध्यम से नृत्य और संगीत की ऐसी सरिता बहाई, जिसमें अवतरित होते ही व्यक्ति ऊँच-नीच, जाति-धर्म से मुक्त हो जाता है।'[44] यही वजह है कि आज भी कई उत्कृष्ट और प्रतिष्ठित कलाओं में बहुजन की भागीदारी नहीं है।

बावजूद इसके भोजपुरी लोक का बहुजन समाज परंपरागत रूप से पीढ़ी-दर-पीढ़ी जिन लोकविधाओं में गायन करता रहा है, उनकी सर्जना की पहचान अधिकांशतः जातीय एवं स्त्री समुदाय के गीतों में है अर्थात भोजपुरी गीत-संगीत की पहचान जातिवादी खाँचों से जाती रही है। मसलन, यादवों का लोरिकायन एवं बिरहा, धोबियों का धोबीगीत, कहारों का कहरवा एवं लाचारी, चमारों का चमरउ, तेलियों का कुँवर विजयी एवं शोभनायक बंजारा, नट एवं नोनिया का आल्हा, स्त्रियों का जँतसारी, कजरी इत्यादि तमाम संस्कारगीत सामाजिक सोपानों की निर्मिति की बदौलत हैं। लेकिन इन जातीय या अन्य लोकगीतों से भीमगीत इस मायने में भिन्न हैं कि जहाँ परंपरागत बहुजन लोकगीतों में वर्चस्ववादियों अर्थात ब्राह्मणवादी किसान संस्कृति प्रवाहित होती है, वहीं भीमगीतों में समानता, स्वतंत्रता एवं बंधुत्व जैसे मूल्यों की सांगीतिक धारा प्रवाहित होती है। भीमगीत बहुजन नायकों के जीवन से प्रेरित हैं और अपनी पहचान के लिए अभिजन संस्कृति का प्रति-सांस्कृतिक चेतना के साथ विकल्प के रूप में भी उभरता है। लेकिन यहाँ आभासी दुनिया में मौजूद भोजपुरी भीमगीतों की दृश्यात्मकता और उसका तकनीकी रिश्ता बताता है कि भोजपुरी भीमगीत को आभासी दुनिया से अलग करके मूल्यांकन नहीं किया जा सकता है। भीमगीत को यूट्यूब पर जो मंच मिला है, वह भारतीय संस्कृति में लोकतांत्रिक मूल्यों को बहाल करता है।

वस्तुतः भीमगीतों का मूल मक़सद बाबा साहब एवं बहुजन चिंतकों के विचारों को बहुजन तक पहुँचाना है, न कि शिल्प-सौंदर्य के लिए कलाकारी करना। बहुजन सौंदर्य को लेकर पहले चर्चा हो चुकी है कि भीमगीतों की सौंदर्य चेतना को उनकी प्रस्तुति के तेवर में देखना होगा। इसलिए यहाँ लोक की अभिजन-संस्कृति वाला आनंद का सौंदर्य नहीं मिलेगा। इसका अलग सौंदर्य-बोध है। बेशक लोक परंपरा में इनकी लंबी विरासत दिखती है। लेकिन पहले बहुजन अपनी लोक विधाओं में अभिजन का इतिहास गाता था, जबकि भीमगीतों में अब लोकविधा भी अपनी और चेतना भी अपनी। लेकिन चयनित लोकविधा के आधार में कोई बहुत बड़ा अंतर नहीं है अर्थात यादव बिरहा या लोरिकायन में ही भीमगीत गाता है जैसे धोबी अपने धोबीगीत में। उदाहरण के लिए नसुड़ी यादव के प्रसिद्ध बिरहों में 'मरखहवा

---

[44] चंद्रभान सिंह यादव (2020) : 17.

दूल्हा', 'नौ दिन की महाभारत', 'कृष्ण का पाप', 'बनारस में चुंगी', 'मकरध्वज की सच्चाई', 'भीष्म पितामह की शादी', 'बांग्लादेश की उत्पत्ति', 'बचऊबीर', 'चार गिलास चार बेवकूफ', 'गाजी मियाँ और राजा बन्नार', 'दालमंडी कांड' और 'ज्ञानवापी कांड' प्रमुख भीमगीत हैं। वहीं राजकुमार यादव के बिरहों में कोरोना की मार ग़रीब हुए लाचार, रामायण की खुली पोल, बिलखता लोकतंत्र इत्यादि प्रमुख भीमगीत हैं। परंतु भोजपुरी के इतर संस्कृति से आए विधा में भीमगीत की गायकी जातीय ढाँचे को ढहाती हुई दिखती है। इस बाबत मुख्य रूप से ऑटो ट्यून वाले डीजे गीतों को यूट्यूब पर देखा जा सकता है।

यूट्यूब पर प्रतिदिन सैकड़ों जो भोजपुरी भीमगीत अपलोड किए जा रहे हैं और जिन्हें कुछ ही दिनों में लाखों दर्शक मिल जाते हैं, उनकी निर्माण प्रक्रिया की कहानी काफ़ी रोचक है। आजमगढ़ के बिरहिया राजकुमार यादव बताते हैं – 'मेरे गीतकार हैं- रामपलट मास्टरजी। हालाँकि कभी-कभार हम दोनों लोग मिलकर भीमगीत लिखते हैं, विषय-वस्तु की प्रामाणिकता से लेकर विधा रूप से लेकर प्रस्तुति तक विचार करते हैं। फिर पहुँचते हैं – हरि ओम रिकॉर्डिंग सेंटर। मेरे गीतों की रिकॉर्डिंग के समय सेंटर के मालिक पर इतना असर हुआ कि रिकॉर्डिंग सेंटर के नाम-परिवर्तन से लेकर स्टूडियो की कायापलट तक के लिए हमारे सुझावों को माना जाने लगा। मेरे ही प्रयास से रिकॉर्डिंग सेंटर का नाम बहुजन म्यूज़िक मंच हो सका, जो यूट्यूब चैनल का भी नाम है। स्टूडियो के अंदर दीवारों पर टँगे हिंदू देवी-देवताओं के कैलेंडरों को हटवाया। वहाँ मेरा बहुत आदर है। रिकॉर्डिंग के लिए मुझे कोई भुगतान नहीं करना पड़ता है। लेकिन संगीत निर्माता को मानदेय देना पड़ता है। बहुजन म्यूज़िक मंच ने ही मेरा अपना यूट्यूब चैनल बना दिया – मूलनिवासी म्यूज़िक मंच नाम से।'[45] इस क्रम में गीतकार मनोज कुमार की वार्त्ता एक भिन्न पहलू को सामने लाती है – 'मेरे लिखे गीत नीलम बौद्ध गाती हैं। नीलम बौद्ध अभी दसवीं क्लास की छात्रा हैं। गीत रिकॉर्डिंग के लिए नीलम के साथ मैं भी कुशीनगर में रिकॉर्डिंग सेंटर जाता हूँ। ऑटो ट्यून रेडीमेड ट्रैक में एक गाने की रिकॉर्डिंग के लिए हमें पंद्रह सौ देने पड़ते हैं और नए ट्रैक में उसका दोगुना देना पड़ता है। यह दुःखद बात है कि कुशीनगर में एक भी रिकॉर्डिंग सेंटर किसी बहुजन का नहीं है। सौभाग्य से ले देकर एक सेंटर मुस्लिम का है, जिसका नाम बीएमजी रिकॉर्डिंग सेंटर है, जहाँ हम अपना गाना गवाकर रिकॉडिंग कराते हैं और फिर उसे अपने यूट्यूब चैनल एमकेजी कुशीनगर पर अपलोड कर देते हैं। हमारे चैनल को अभी दो ही साल हुए हैं।'[46] यहाँ ग़ौरतलब है कि संगीत रिकॉर्डिंग सेंटर आमतौर पर व्यावसायिक हैं अर्थात जो भुगतान करने में सक्षम है, वो अपने गीत-संगीत का ऑडियो-वीडियो तैयार करवा सकता है। बावजूद इसके सवर्णों के रिकॉर्डिंग सेंटर में भीमगीत गायन के लिए मौक़ा नहीं दिया जाता है। मतलब भारत का जातिवादी समाज अपनी व्यावसायिकता से भी समझौता कर जाता है। भोजपुरी भीमगीत के जिन गायकों के लोकप्रिय यूट्यूब चैनल हैं, उनमें किशोर कुमार 'पगला', रविराज बौद्ध, राजकुमार यादव, मालती बौद्ध, प्रो.

---

[45] 22 अगस्त, 2020 को टेलीफ़ोनिक बातचीत.

[46] 22 अगस्त, 2020 को टेलीफ़ोनिक बातचीत.

सरोज त्यागी इत्यादि प्रमुख हैं। इस तरह यह समझने के लिए एक अच्छा उदाहरण है कि तकनीक और इंटरनेट का उपयोग करके आंबेडकरवादी विचारधारा को कैसे प्रसारित किया जा सकता है। वहीं दूसरी ओर लोकप्रिय भीमगीतों के वीडियो को हज़ारों लोगों द्वारा साझा किया जा रहा है।[47] भीमगीत वीडियो के अंतर्गत दर्शकों की टिप्पणियाँ वास्तविक प्रतिक्रियाएँ हैं, जो ज़्यादातर भावनाओं से भरी हुई हैं। ये प्रतिक्रियाएँ भोजपुरी सवर्ण हिंदू समाज की हैं। भीमगीतों की मज़बूत, तीखी और सुरीली आवाज़ जाति-विरोधी आंदोलन और उसके चुनौतीपूर्ण वर्तमान के साथ अतीत को रखती हैं। जैसा कि इस लेख का पूरा विमर्श ही डिजिटल दुनिया में भीमगीत की मौजूदगी पर आधारित है। भोजपुरी भीमगीत की पहचान तकनीकी की वजह से है। बहुजन अब भीम जयंती या रविदास जयंती मोबाइल पर भी मनाने लगा है –

> इतने बा अरजी मानी मोर बात हो, दीक्षा भूमि लोग बाटे जात हो।
> फोर जी मोबाइल प सेटिंग कर सेट पर,
> बाबा भीम अप्रैल में अइहें अवसों नेट पर।
> टह टह लागल बाड़े लड़ी बाबा के, सर्च करके देखल जाइ जियो के डाटा से।
> बाटे अवेलेबल पिया सारा इंटरनेट पर, बाबा भीम अप्रैल में अइहें अवसों नेट पर।[48]

डीजे भीमगीत गायक गुलशन गौतम बताते हैं कि 'मेरे गाँव, मेरे समाज में मेरे जोड़ापारी के लड़के भीम जयंती हो, चाहे रविदास जयंती, शादी-विवाह हो चाहे घर में बच्चे का जन्मदिन, मेरा गाना मोबाइल को स्पीकर (ब्लूटूथ) से जोड़कर बजता है, उस पर डांस करते हैं।... दूसरे भीमगीत भी बजते हैं। यह गीत अपना है। लोग इमोशन से सुनते हैं, उस पर नाचते हैं।'[49]

डिजिटल दुनिया का भीमगीत हमें संगीत की भाषिक विशेषता और उसके प्रभाव की प्रकृति को समझने में मदद करता है, क्योंकि संगीत एक भाषा में बातचीत करता है, जो लोगों के साथ ध्वनि के भीतर विरासत में मिली है, जिसके परिणामस्वरूप लोगों को यह महसूस होता है कि वे समुदाय का हिस्सा हैं।

यूट्यूब पर मौजूद भीमगीतों की दृश्यात्मकता का अध्ययन कई आधारों पर किया जा सकता है – एक, भीमगीतों की प्रस्तुति में विधात्मक प्रयोग; दूसरे, रंग प्रतीकों का प्रयोग; तीसरे, यूट्यूब चैनलों की लोकप्रियता; पाँचवें, समकालीन लोकप्रिय गायकों की छवियों का इस्तेमाल; छठे, बहुजन रैलियों के विजुअल्स; सातवें, नृत्य प्रस्तुतियाँ इत्यादि।

भीमगीत भोजपुरी लोक परंपरा के बेहद अनुकूल ही नहीं, बल्कि लोक गीत या गाथाओं की प्रस्तुति शैली के पूरक भी हैं। नसुड़ी यादव, काशीनाथ यादव इत्यादि बिरहा-शैली के

---

[47] https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=2225025254412295&id=1394175487497280 'बाबा भीम राव हो रहले, देस के महानवा'.

[48] https://youtu.be/g7rUfj5YvfM

[49] 23 अगस्त, 2020 को टेलीफ़ोनिक बातचीत.

भीमगीत गायकों ने भोजपुरी की नौटंकी से लेकर बिदेसिया शैली का प्रयोग के साथ लोकनाट्य रूपों में डोमकच, जोगिरा, नेटुआ नाच, हुड़का नाच, पखावज की धुनों, गीति-कथाओं में सोरठी-बृजभार, गोपीचंद, सतीविहुला, कौआ-हँकनी, कुँवर विजयीमल और आल्हा-ऊदल इत्यादि की संवेदना और प्रस्तुति गायन शैली तथा असंख्य संस्कार एवं लोकगीतों में सोहर, खिलौना, परिछावन, कोहवर, संझा-पराती, चुमावन, विदाई, पूरबी, झूमर, कवित्त, जँतसारी, निरगुन, सुमिरन, बिरहा, पचरा, खेमटा, लचारी, होरी, फाग, चैती, भजन, फ़िल्मी धुन, डीजे गीत, छठगीत, कजरी और बारहमासा आदि तथा उनकी धुनों का भीमगीतों की प्रस्तुती-शैली में भरपूर उपयोग किया जा रहा है।

ऑडियो-वीडियो भीमगीतों की प्रस्तुति में सिर्फ़ और सिर्फ़ नीले रंग[50] का साम्राज्य दिखता है। यह नीला रंग[51] कहीं शांति का संदेश दे रहा है, कहीं आक्रोश बनकर हुंकार भर रहा है अर्थात संघर्ष का प्रतीक है, कहीं यह आकाशधर्मा अनंतता को दर्शा रहा है, कहीं वह समानता का संदेश दे रहा है, और सबसे बड़ी बात यह है कि नीला रंग दलित-बहुजन अस्मिता के प्रतीक रूप में है। इसके साथ भीमगीतों में एक ओर महात्मा बुद्ध और बाबा भीम के माल्यार्पित तस्वीरों के समक्ष नृत्यात्मक गायन होता है तो दूसरी ओर महात्मा बुद्ध की जन्मस्थली से लेकर ज्ञानस्थली होते हुए निर्वाणस्थली तक के दृश्य दिखाए जाते हैं। ऑडियो रूप में प्रतिरोधी भीमगीतों में अमूमन नीला झंडा लिए मार्च करते हज़ारों-लाखों लोग होते हैं, जो 'जय भीम' के नारे से लेकर तमाम बहुजन नारे लगाए जाते हैं। संख्या बल की दृश्यात्मकता भीमगीत को दमदार बनाती है।

यूट्यूब पर भोजपुरी के लोकप्रिय गायकों से लेकर और टीवी पर कॉमेडी धारावाहिक 'भाभी जी घर पर हैं' की अंगूरी भाभी की छवियों के साथ भीमगीतों को अपलोड किया गया है और लोकप्रिय यूट्यूब के सब्सक्राइबर्स काफ़ी होने के कारण भीमगीतों को अपलोड करने पर दर्शकों की संख्या बढ़ जाती है।

दलित जाति से ताल्लुक़ रखने वाले भीमगीत गायकों की परंपरागत लोकधुनों में वैसी आक्रामकता नहीं है, जैसी आक्रामकता पिछड़ी जाति के भीमगायकों में। दलित भीमगायकों

---

[50] डॉ. आंबेडकर ने अपनी एक पार्टी बनाई थी, जिसका नाम था—*इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी*, अपनी इस पार्टी के झंडे का रंग नीला रखा था. कहा जाता है कि उन्होंने यह रंग महाराष्ट्र की सबसे बड़े दलित वर्ग महार के झंडे से लिया. विस्तार से देखें- बेनसॉन राजन और श्रेया वेंकटरमन का लेख, *फैब्रिक रेनडेरेड आइडेंटिटी : अ स्टडी ऑफ़ पा. रंजीत 'स अट्टाकठी, मद्रास ऐंड कबाली*, अर्थ जर्नल ऑफ़ सोशल साइंस, (2017), वॉल्यूम- 16, संख्या 3 : 17-37.

[51] ज्योतिष विज्ञान रंगों के प्रयोग पर भविष्यवाणी करके लोक समझ तैयार करता है. ज्योतिष में नीला रंग शनि और राहू से संबंधित है. इससे सम्मोहन और आकर्षण पैदा होता है. यह रंग ज़हर और मृत्यु का भी है. यह रंग नींद को गहराता है. नीले रंग के बारे में कुछेक बातें इस रूप में भी कही जाती हैं – एक, संपूर्ण जगत में नीले रंग की अधिकता है. धरती पर 75 प्रतिशत फैले जल के कारण नीले रंग का प्रकाश फैला हुआ है. इसलिए आसमान नीला दीखता है और चूँकि नीला रंग जल तत्व का प्रतिनिधित्व करता है. नीला रंग पानी की ही तरह चंचल, गतिमान और जीवनदायिनी शक्ति प्रदान करता है. दूसरे, कहते हैं कि नीले रंग से बैक्टीरिया और मच्छर दूर रहते हैं. भारत में कई घरों के बाहर नीले रंग की पुताई संभवत: इसीलिए की जाती होगी. तीसरे, नीला रंग अध्यात्म और भाग्य से संबंध रखता है. एशिया में यह पवित्रता का भी बोधक रहा है.

में पीड़ित स्वर ही मुखर है। लेकिन जो संगीत भोजपुरी के न होकर कहीं और से आयातित हैं, उनमें दलित भीमगीत गायकों में भी आक्रामकता आ गई है। बिरहा शैली के भीमगीतों में मनुवाद से लेकर तमाम सामाजिक कुरीतियों के प्रतिरोध में स्वर बेहद बुलन्द है और इस बिरहा गायकी में अधिकांशतः पिछड़ी जाति के लोग हैं।

भीमगीत गायकों में सबसे अधिक बिरहा गायकों ने कथा के माध्यम से अपनी प्रस्तुति दिया है। कथा की भूमिका के लिए गायक हिंदी भाषा का प्रयोग करता है, हिंदी सिनेमा से लिए गए फ़िल्मी धुन हिंदी में रखता है, तर्क-वितर्क की भाषा को हिंदी में रखता है लेकिन संवेदनशील पहलू के चुनौती को गायक भोजपुरी में ही अभिव्यक्त करता है।

कहना न होगा कि भोजपुरी बेल्ट में भीमचर्चा किशोरावस्था में पहुँचने वाला है। लेकिन इससे पहले इस बेल्ट में शिव चर्चा[52] काफ़ी लोकप्रिय हो चुका है। शिव चर्चा के दौरान घटित घटनाओं को समाचारपत्रों में अंध-विश्वास[53] फैलाने की ख़बर भी छपी। फिर भी लोग उस अंध-विश्वास के समंदर में पवित्र स्नान करते हैं। लेकिन भीमचर्चा[54] में सामाजिक स्तरीकरण से लेकर बहुजन इतिहास पुरुषों के जीवन एवं संघर्ष की गाथा पर चर्चा की जाती है। भीमचर्चा का नेतृत्व करने वाले आंबेडकरवादी बौद्धिक बहुजन धारा के नायकों के जीवन और लेखन के बारे में व्याख्यान देते हैं और तत्कालीन बहुजन की ज्वलंत समस्याओं पर प्रकाश डालते हैं। भीम चर्चा मुख्य रूप से अभी संत रविदास के जन्मोत्सव और आंबेडकर की जन्म तिथि एवं पुण्य तिथि के अवसर पर आयोजित होती है।

निष्कर्ष

भीमगीतों के अवलोकन से अफ़्रीक़ी साहित्यकार चिनुआ अचेबे का वो मशहूर कथन साकार हो रहा है, जिसमें उन्होंने कहा था कि जब तक हिरण अपना इतिहास ख़ुद नहीं लिखेंगे, तब तक हिरणों के इतिहास में शिकारियों की शौर्यगाथाएँ गाई जाती रहेंगी। आज लगभग संपूर्ण

[52] शिव, हिंदू धर्म के प्रमुख देवताओं में से एक हैं. वे शैव धर्म में प्रमुख हैं, शिव के शिष्यों ने दुनिया भर में शिव चर्चा के छोटे छोटे समूह बना रखे हैं. शिव चर्चा में तीन सूत्रों की बात की जाती है. पहला – दया माँगना अर्थात जब आप शिव को सच्चे मन से याद करेंगे तो शिव गुरु आपकी भावनाओं को देखकर आप पर दया करने पर विवश हो जाएँगे और हम ये भी जानते हैं कि हर कार्य शिव गुरु की दया से ही शुरू होता है. 'हे शिव! आप जन जन के गुरु हैं, मैं आपका भक्त हूँ और मैं आपके अधीन हूँ. हे प्रभु! अपने इस भक्त पर दया करें.' दूसरा – चर्चा करना अर्थात यह सबसे मुख्य सूत्र है, जब दो या दो से ज़्यादा मनुष्य शिव गुरु को याद करते हैं तो उसे शिव गुरु की चर्चा कहते हैं. इससे अपने गुरु का ध्यान करते हैं. तीसरा सूत्र- नमन करना अर्थात जब शिव को गुरु बना लिया तो नमन करना ही है. इसके दो तरीक़े हैं, पहला – माला विधि और दूसरा – अजपा-जाप. इन दोनों तरीक़ों में से किसी भी जाप से शिव गुरु को प्रणाम कर सकते हैं. 'नमः शिवाय' – यह मंत्र पढ़ने से, कुछ ही दिनों में शिष्य महसूस कर पाएगा कि उसके जीवन में कुछ अच्छे बदलाव आ रहे हैं. शिव गुरु उसके सारे दुःख और कष्ट दूर कर लेंगे.

[53] https://www.amarujala.com/uttar-pradesh/deoria/Deoria-49616-68

[54] https://www.youtube.com/watch?v=Hmb4Y8VMqdk&t=471s इस वीडियो में भीमचर्चा का नेतृत्व करने वाली डॉ. इंदु चौधरी (अपने हर भाषण में) कहती हैं – 'गुड मॉर्निंग बोलते हैं तो सुबह की पहचान होती है, गुड ईवनिंग बोलते हैं तो शाम की पहचान होती है, कुछ लोग राम राम कहते हैं तो शायद भगवान की पहचान होती है, कुछ वालेकुम सलाम कहते हैं तो उनको उनके भगवान/अल्लाह की पहचान होती है, पर हम कहते हैं 'जय भीम' बोलने से इंसान से इंसान की पहचान होती है'.

भारत में हिरण रूपी बहुजन उद्भव के भीमगीत गाए जा रहे हैं। जिनमें दलित अपने जातीय नामों का उल्लेख करते हुए समाज में एक सम्मानित स्थान पाने का प्रयास कर रहे हैं। यह प्रयास उस जातीय अपमान के लिए स्थापित मुहावरों को चुनौती दे रहा है। जो बहुजन पहले अपने लोक आख्यानों में अपने प्रभुत्वशाली समाज का इतिहास गाते आ रहा था, अब वह ख़ुद की दृष्टि से अपनी परंपरागत विधा में अपना इतिहास गाने लगा है। इस इतिहास की रचना उत्पीड़न, उपेक्षा एवं विकृतीकरण के बरअक्स हुई है।

बेशक आंबेडकरवाद को भोजपुरी लोकवृत्त में काफ़ी देर से लाया गया। अभी भी भोजपुरी बेल्ट भीमगीतों को एक समुदाय विशेष के गीत से ज़्यादा कुछ नहीं समझता है। यह बिडंबना ही है कि भीमगीतों में मौजूद भारतीय संवैधानिक मूल्यों – स्वतंत्रता, समानता एवं भाईचारे, को सुने बगैर ही प्रभुत्व वर्ग सीमित कर देता है।

पंजाबी के साथ गुजराती, मराठी, हरियाणवी, भोजपुरी भाषाओं में ऐसे अनेक भीमगीत लिखे जा रहे हैं, जिन्हें ऑडियो-वीडियो के रूप में रिकॉर्ड करके यूट्यूब पर पोस्ट किया जा रहा है। वहाँ इन्हें बख़ूबी देखा-सराहा जा रहा है और साथ ही भद्दी एवं जातिसूचक गाली के रूप में टिप्पणियाँ भी आ रही हैं। ये टिप्पणियाँ भोजपुरी समाज में दिन-प्रति-दिन के जीवन में हो रही गतिशीलता को समझने में मददगार हैं। डिजिटल दुनिया की यह हलचल बहुजन समाज के सशक्तीकरण को दर्शाती है। इस प्रक्रिया में आभासी संसार को अराजकता के बजाय लोक-तांत्रिकता के रूप में देखना ज़्यादा उचित होगा।

संदर्भ

बहुजन हिताय बहुजन सुखाय : https://hi.wikipedia.org/wiki/बहुजन_हिताय_बहुजन_सुखाय.

आंबेडकरवादी विरोध गीत और 'काउन्टर पब्लिक' का निमार्ण : https://hindi.newsclick.in/Ambedkarite-Protest-Music-Dalit-Panthers-Cultural-Protest

गाहे बगाहे : कहु धौं छूत कहां सों उपजी, तबहि छूत तुम मानी : https://junputh.com/column/gaahe-ba-gaahe-nasudi-yadav.

राग दरबारी : कमंडल और मंदिर के बीच दम तोड़ता सामाजिक न्याय : https://junputh.com/column/raag-darbari-on-decay-of-social-justice-politics-in-up-and-bihar/.

अंबेडकर जयंती के दिन सुनिए भोजपुरी में इस गीत को! इसे भाकपा माले के कैमूर ज़िले के साथियों ने रचा और गाया : https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=2225025254412295&id=1394175487497280'.

इतिहासकार सुभाषचंद्र कुशवाहा की फ़ेसबुक पोस्ट : https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=3534775746541397&id=100000270181351.

इतनी ख़ास क्यों है भीम गीत की ऐतिहासिक परंपरा? : https://www.aajtak.in/podcast/best-podcasts-in-hindi/audio/why-bheem-geet-historical-tradition-is-so-important-1052639-2020-04-14.

अमर उजाला : https://www.amarujala.com/uttar-pradesh/deoria/Deoria-49616-68.

भीमगीत गायक परमजीत सिंह पम्मा : https://www.newsplatform.in/big-news/dalit-pop-culture-political-assertion/

तारकेश्वर राव टंडन : https://www.youtube.com/watch?v=_F8p3XZa1gs.

भीम जी के दिहल ह नौकरिया : https://www.youtube.com/watch?v=3cLsKaQL22k&list=RD8GSQJ5lsRLY&index=5.

मारे मरदा के मेहरिया : https://www.youtube.com/watch?v=5l4_rjypuuQ.

जय भीम बोलने से इंसान को इंसान की पहचान होती है - श्रीमती इंदु चौधरी : https://www.youtube.com/watch?v=Hmb4Y8VMqdk&t=471s.

भीमगीत : https://www.youtube.com/watch?v=PjwNKrkzCcQ.

आ गया नीलम बौद्ध का शानदार शादी विवाह भीम गीत, काहे जय भीम बोले में लाज लगता : https://www.youtube.com/watch?v=x0M9S9dCE6s&list=RDhYV4w2qD9a8&index=4.

भीम गीत, भले अईला भीम बाबा : https://www.youtube.com/watch?v=XK_M_Ai9WhY&list=RDXK_M_Ai9WhY&start_radio=1.

लड़की चाही आंबेडकरवादी : https://youtu.be/1CVTN7Sco6M

योगेश पगारे की शॉर्टफिल्म 'मुलाकरम्' : https://youtu.be/Bg0h7XM_7zA.

बाबा अइहें नेट पर : https://youtu.be/g7rUfj5YvfM

आईडल बहुजन सॉन्ग 4 : https://youtu.be/kSK80pQZn9Y.

कहाँ देवी देवता लुकईले : https://youtu.be/Ml6Kr4teF4U.

भीमगीत : https://youtu.be/o19SS3Ru_Vc

बलात्कारियों को फाँसी दो : https://youtu.be/s5n0z9FvGBU.

राष्ट्रीय बहुजन गायक का जबरदस्त भीमगीत : https://youtu.be/wfDkkXaaJIM.

नीला झंडा तोहरा छाती पे फहरी : https://youtu.be/z0qCeV5td0Q.

भीमगीत : https://youtube/Ls0LFnLO2hM.

आर. चम्पकलक्ष्मी (1996), 'फ्रॉम डीवोसन ऐंड डिसेंट टू डोमिनांस : द भक्ति ऑफ़ द तमिल अल्वार्स एंड नयनार्स, ट्रेडिशन, डिसेंट ऐंड आइडियोलॉजी', *एसेज इन ऑनर ऑफ़ रोमिला थापर*, (सं.) आर. चम्पकलक्ष्मी और एस. गोपाल, ऑक्सफ़ोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली : 145, 153-163.

कांचा इलैया (2018), *बफैलो नैशनलिज़म*, सेज, दिल्ली.

चंद्रभान सिंह यादव (2020), *हिन्दी साहित्य में दलित चिंतन*, सामयिक प्रकशन, दिल्ली.

नाट्यशास्त्र (2023) (सं.), राधावल्लभ त्रिपाठी, बानी प्रकाशन, भोपाल.

प्रमोद रंजन और आयवन कोस्का (सं.), (2017), *बहुजन साहित्य की प्रस्तावना*, द मार्जिनलाइज्ड पब्लिकेशन, दिल्ली.

बेनसॉन राजन और श्रेया वेंकटरमन (2017), 'फैब्रिक रेनडेरेड आइडेंटिटी : अ स्टडी ऑफ पा. रंजीत'स अट्टाकठी, मद्रास ऐंड कबाली', *अर्थ जर्नल ऑफ सोशल साइंस*, खंड 16, संख्या 3 : 17-37.

तैयब हुसैन पीड़ित (2014), 'भोजपुरी जिंदगी' *त्रैमासिक पत्रिका*, अगस्त : 12.

राहुल सांकृत्यायन (1943), *तीन नाटक*, किताब महल, इलाहाबाद.

शरण कुमार लिंबाले (2005), *दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र* (अनु.), रमणिका गुप्ता, वाणी प्रकाशन, दिल्ली.